प्राक्कथन

राष्ट्रीय आर्थिक विकास में व्यापक सूचना सेवा महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में पहचाना जा चुका है। किसी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास प्रभावकारी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी सूचना सेवा पर आधारित है। यह अनुभव किया गया है कि विशेष रूप से विकासशील देशों में अल्प विकसीत वर्ग जो जनसंख्या का 75% से अधिक है के समीप विज्ञान व यांत्रिक सूचना सामाजिक सेवाएं नहीं पहुँची है और न ही आर्थिक रूप से पिछड़े हुए समुदाय के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया गया है। राष्ट्रीय विकास का अर्थ पूरे समाज के मानव जीवन के गुणात्मक विकास के रूप में होना चाहिए न कि किसी समाज विशेष या समुदाय विशेष के लिए। समाज के बड़े हिस्से पर ध्यान केन्द्रीत करने वाली योजनाएं निर्मित की जा चुकीं हैं। अल्प सूचना सेवाओं को उनकी उत्पादक क्षमता व मानव जीवन के हर पहलुओं को उन्नत करने के उद्देश्य के रूप में परिणत किया जाना आवश्यक है।

सूचना एक महत्वपूर्ण विचार है। इसकी महत्ता सर्वत्र है। और यह लगभग सभी समुदायों में ग्राह्य है। चुंकि इसके परिणाम से विकसित तकनीक, नए आयाम और निर्माणकारी लाभ सभी समुदाय के द्वारा अपनाया जाता है। इसकी आवश्यकता पर्याप्त मात्रा में प्रत्येक क्षेत्र एवं स्तर पर महसूस किया जाता है। यथा - व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर। जब किसी समुदाय सूचना के नियोजन की बात होती है जो सूचना के स्वतंत्र प्रवाह लक्ष्य के लिए, सुक्ष्म संरचनात्मक सुविधाओं के लिए और स्वाध्याय के आदत एवं सूचना खोज व्यवहार के लिए तो सूचना की आवश्यकता एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि उस तंत्र को प्रभावी बनाने के लिए प्राथमिकता के तौर पर चित्रित होना चाहिए।

प्राचीन समय से ही भारत वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र रहा है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से किए गए प्रयासों से इस उद्योग ने निरंतर प्रगति की है। भारत में अनेक कुटीर एवं लघु आकार के उद्योग प्रचलन में है। कुटीर उद्योग में हाथकरघा पर निर्मित विविध प्रकार के वस्त्रों में छत्तीसगढ़ के बुनकर समुदाय (कोष्टा) द्वारा उत्पादित कोसा वस्त्र जनमानस पटल पर सदियों से अपना विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। प्रदेश के रायगढ़ एवं चाम्पा अंचल के बुनकरों द्वारा उत्पादित कोसा वस्त्र की मांग राष्ट्रीय बाजार के साथ -साथ अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी की जाती है। वे स्वरोजगार करते हुए ग्रामीणों के लिए रोजगार का अवसर प्रदान करते हैं और राज्य व देश के आर्थिक क्षेत्र

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बुनकर समुदाय (कोष्टा) हाथ से बने हुए कोसा के विभिन्न प्रकार के कपड़े निर्यात कर राज्य व देश के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में सहायता करते हैं।

हाल के वर्षों में विभिन्न परिवेश से संबंद्ध सूचना खोज व्यवहार एवं पठन आदत पर अनेक शोधार्थी अनुसंधान कार्य में संलग्न हैं। किंतु पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के विद्वानों व शोधार्थियों के द्वारा जांजगीर -चाम्पा एवं रायगढ़ क्षेत्र के बुनकर समुदाय (कोष्टा) की सूचना आवश्यकताओं के खोज के लिए अब तक कोई प्रयास नहीं किया गया है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में महत्वपूर्ण और काफी अरसे से तिरस्कृत बुनकर समुदाय (कोष्टा) की बुनाई व्यवसाय से संबंधित विविध सूचना आवश्यकताओं को उद्घाटित करते हुए उनके विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत की गई है जो ग्रामीण हाथकरघा उद्योग के विकास के लिए राज्य एवं देश में सामदायिक सूचना पद्धति के ढांचा तैयार करने की दिशा में योजनाकारों को विशेष सहायक हो सकेगी।

गिरीश शंकर वैष्णव

---000---